उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय के संदर्भ में समायोजन व अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर
को
शिक्षा की मानद उपाधि
की
आंशिक पूर्ति हेतु सम्प्रेषित
शोध प्रारूप

निर्देशिका

डॉ. श्रीमती यामिनी पालीवाल

शोधार्थी

जेवी,एन. श्रीमती विमला शर्मा

शिक्षा विभाग ज्योति विद्यापीठ, जयपुर राज.

उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय के सदंर्भ में समायोजन व अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन –

प्रस्तावना :–

मानव समाज में मनुष्य सबसे ज्यादा चिन्तनशील प्राणी है। आस पास का परिवेश व्यक्ति को सोचने के लिए विवश करता है। मानव विकास की अवस्थाओं में किशोरावस्था सबसे ज्यादा चिन्तनशील अवस्था है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक स्टेनले हॉल ने लिखा भी है किशोरावस्था संघर्ष व तूफान की अवस्था है। वर्तमान युग में मानव जीवन जटिल है। प्रतिक्षण व्यक्ति का ध्यान अपने अस्तित्व पर जाता है। सामाजिक जीवन में जब बालक अन्य लोगो के सम्पर्क में आता है तो उनके व्यक्तित्व व व्यवहार से प्रभावित होकर वह स्वयं के बारे में जानने के लिए जिज्ञासु होता है जैसे मैं कौन हूँ, क्या हूँ, मेरी भूमिका क्या है। मुझमें क्या अच्छाईयां है, क्या कमियां है, लोगो की नजर में मेरा स्थान क्या है। यह चिन्तन ही आत्म–सम्प्रत्य कहलाता है। यह आत्म सम्प्रत्यय बालक के समायोजन को प्रभावित करता है। समायोजन जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। समायोजन तालमेल तथा अनुकूलन को एक ही अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है।

जन्म लेते ही बालक को अपने भौतिक वातावरण के साथ अनुकूलन करना पडता है। जीवन के अस्तित्व के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है। कुछ समय उपरान्त बालक को अपने सामाजिक एवं संस्कृतिक वातावरण के साथ भी समायोजन करना पडता है। आज जबकि विश्व को विश्व

गांव भी संज्ञा दी गई है तो सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण के साथ बालक हो या प्राढ समायोजन करना आसान नही है। विश्व में हो रहे तीव्र परिवर्तनों के साथ संतुलन बनाने का प्रयास प्रत्येक व्यक्ति कर रहा है। भौतिक सामाजिक वातावरण से अलग एक आर वातावरण है जो प्रत्येक व्यक्ति के अन्तर्मन से सम्बन्धित है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी इच्छाएं रूचियां व संज्ञानात्मक योग्यताएं भी उसे विभिन्न प्रकार से भिन्न भिन्न स्तरो पर समायोजन हेतु प्रभावित करती है। व्यक्ति को अपनी योग्यताओं और वातावरण के संदर्भ में जीवन की चुनौतियों का सामना करना पडता है। जब वह इन चुनोतियों का सामना करने में स्वयं को असमर्थ पाता है तो दबाव, तनाव, निराशा, कुष्ठा से ग्रसित हो जाता है। विद्यार्थी जीवन में य मानसिक रोग का रूप लेकर अध्ययन को प्रभावित करती है। इसमें पारिवारिक संरचना व लिगभेद की समस्या भी अपनी कम भूमिका नही निभाती है।

मनोवैज्ञानिको ने समायोजन की प्रक्रिया के सम्बन्ध में दो प्रकार से विचार प्रस्तुत किये है प्रथम समायोजन एक प्रक्रिया के रूप में व द्वितोय समायोजन एक उपलब्धि के रूप में।

समायोजन एक प्रक्रिया (Adjustment as a process) –

समायोजन प्रक्रिया में व्यक्ति तथा वातावरण दोनो प्रभावित होते है। व्यक्ति समायोजन करने के लिए अपने बाहा वातावरण के साथ निरन्तर अन्तःक्रिया करता है। समायोजन करने के लिए कई बार वह स्वयं को बदलता है तो कई बार वह वातारण को बदलने का प्रयास करता है ऐसे भी उदाहरण मिलते है जबकि व्यक्ति ने समंजन की प्रक्रिया में स्वयं को व वातावरण को दोनो को परिवर्तित किया है।

समायोजन एक उपलब्धि **(Adjustment as a Achievement)** –

इसका तात्पर्य किसी व्यक्ति की समायोजन क्षमता की गुणवत्ता है। किसी व्यक्ति द्वारा विभिन्न परिस्थितियों में अपने दायित्वों का पालन करना ही समायोजन है। समायोजन का बुरा या अच्छा होना ही उपलब्धि है। किसी भी राष्ट्र या समाज की उन्नति सुसमायोजित व्यक्तियों पर निर्भर करतो है। एक अच्छे समायोजन पर निर्भर करती है। एक अच्छे समायोजन का तात्पर्य –

(अ) शारीरिक स्वास्थ्य

(ब) मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य

(स) कार्य प्रभावशीलता

(द) सामाजिक स्वीकृति के साथ कार्य करना है।

समायोजन को भिन्न भिन्न प्रकार से परिभाषित किया गया है।

बोरिंग, लैगफील्ड तथा वेल्ड **(Boring, lang, field & weld)** – समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रार्थी अपनी आवश्यकताओं तथा आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली पस्थितियों में संतुलन रखता है।

स्किनर **(Skinner)** – समायोजन एक अधिगम प्रक्रिया है।

गेट्स एवं अन्य **(Gates and others)** – समायोजन एक सतत प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने व वातावरण के मध्य सामजस्यपूर्ण सम्बन्ध के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।

कौलमेन (Colaman) के अनुसार – समायोजन अपनी आवश्यकताओं को पूरा तथा खिंचावो से निपटने के लिए व्यक्ति द्वारा किये गए प्रयासो का परिणाम है।

शैफर (Shaper) – समायोजन एक प्रक्रिया है जिसमें प्राणी अपनी आवश्यकताओं व परिस्थितियों और उन आवश्यकताओं की संतुष्टि को प्रभावित करती है।

उपरोक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति की आन्तरिक आवश्यकताओं तथा वातावरण की बाहा मांगो के मध्य संतुलन की स्थिति तक पहुंचना अनिवार्य है। अतः यह कहा जा सकता है कि समायोजन वह स्थिति या दशा है जहां व्यक्ति का व्यवहार समाज अथवा संस्कृति सम्मत हो आर साथ–साथ उसकी स्वयं की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला हो।

समायोजन का शैक्षिक महत्व (Educational Importance of Adjustment) – समायोजन का अध्ययन शिक्षा मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है इसके निम्नाकिंत कारण है।

1. समायोजन के अध्ययन द्वारा अध्यापक बालको की आवश्यकताओं तथा इच्छाओं को भली–भांति समझ सकता है। जो उसे उनके साथ सहनुभूतिपूर्वक व्यवहार करने में सहायता पहुंचती है।
2. इस अध्ययन में शिक्षक को तनाव उत्पन्न करने वाले कारणो के बारे में समुचित ज्ञान होता है। इस ज्ञान से वह बालको को उन पर विजय प्राप्त करने के तरीको से पहले परिचित करवा सकता है।

3. **बालको में तनाव का कुछ भाग में होना आवश्यक होंता है यह तनाव अभिप्रेरण का कार्य करता है। महान विचारक, लेखक या कलाकार अपने अन्दर उत्पन्न तनाव के कारण ही उस ढंग से पढ लिख सके। उनके द्वारा उत्पन्न विचारो का महत्व होता है, अतः अध्यापक को सही महत्व का मूल्याकंन करके उसे अभिप्रेरक के रूप में प्रयोग करना चाहिए।**

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

1- त्रिप्ती व्यास 1 *, प्रो। रवि गुंथे 2 9 (दिसंबर 2017) - "एडोल्सल टी छात्रों के बीच भावनात्मक परिपक्वता और आत्मविश्वास"। वर्तमान अध्ययन किशोरावस्था में भावनात्मक परिपक्वता और आत्मविश्वास का मूल्यांकन करता है। नमूना राजस्थान के जोधपुर जिले से 200 छात्रों (100 पुरुष और 100 महिला) शामिल थे। डॉ। यश गुप्ता द्वारा विकसित आत्म-विश्वास सूची (एएससीआई), डॉ यशेश सिंह और डॉ महेश भारगव द्वारा विकसित भावनात्मक परिपक्वता स्केल। डेटा का विश्लेषण "टी" परीक्षण का उपयोग करके किया गया था। परिणामों ने पाया कि भावनात्मक परिपक्वता पर नर और मादा किशोरावस्था के बीच महत्वपूर्ण अंतर है; भावनात्मक परिपक्वता के स्तर पर शहरी और ग्रामीण किशोरावस्था के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं; और आत्मविश्वास पर नर और मादा किशोरावस्था के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है लेकिन आत्मविश्वास के स्तर पर शहरी और ग्रामीण किशोरों के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

2- पी। सूर्य 1, श्रीमती महेंद्रन 2 9 (जुलाई 2017) एक अध्ययन समायोजन समस्या और मैथमेटिक्स में उपलब्धि पर इसकी प्रभाव AMONG सेकेंडरी स्कूल के छात्रों को पता चलता है कि समायोजन समस्या ने सामान्य रूप से छात्र गतिविधियों, व्यवहार, स्वास्थ्य और शिक्षा पर असर डाला है। इस अध्ययन का उद्देश्य समायोजन समस्या और माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच गणित में उपलब्धि पर इसके प्रभाव की जांच करना है। जांचकर्ता ने समायोजन समस्या के

प्रभाव और माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच गणित में उपलब्धि पर इसके प्रभाव का अध्ययन करने के लिए सर्वेक्षण विधि अपनाई। इस अध्ययन के लिए तमिलनाडु के डिंडीगुल जिले में स्थित चार सरकारी और निजी स्कूलों के 300 माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का एक नमूना सरल यादृच्छिक नमूना तकनीक का उपयोग कर जांचकर्ता द्वारा चुना गया था। निष्कर्ष बताते हैं कि समायोजन समस्याओं में महत्वपूर्ण अंतर है और गणित में अकादमिक उपलब्धि पर माध्यमिक स्कूल के छात्रों के बीच इसका प्रभाव है। निष्कर्ष बताते हैं कि माध्यमिक विद्यालय के 15.66% छात्र उपलब्धि पर निम्न स्तर के प्रभाव से संबंधित हैं। माध्यमिक विद्यालय के 47% छात्र उपलब्धि पर मध्यम स्तर के प्रभाव से संबंधित हैं। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का 16.67% छात्र उपलब्धि पर उच्च स्तर के प्रभाव से संबंधित हैं। यह भी पाया जाता है कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच गणित में अकादमिक उपलब्धि पर समायोजन समस्याओं का एक महत्वपूर्ण प्रभाव है।

3- निकिता एस, टेस्सी ट्रेसा जोस एंड ब्लेसी प्रभा वलसरज (जर्नल) अकादमिक तनाव पर खुदरा अध्ययन और स्वयं चयनित स्कूलों में उच्च माध्यमिक शिक्षाएं। इस अध्ययन ने उडुपी जिले के चयनित निजी स्कूलों में उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच अकादमिक तनाव और आत्म-सम्मान की पहचान की। यह अकादमिक तनाव और आत्म-सम्मान के बीच मौजूदा सहसंबंध भी पाया। शोधकर्ता और रोसेनबर्ग आत्म-सम्मान पैमाने द्वारा निर्मित अकादमिक तनाव रेटिंग पैमाने का उपयोग डेटा संग्रह के लिए किया गया था। प्रश्नावली 96 साल पहले विज्ञान बैच के उच्चतर माध्यमिक छात्रों द्वारा पूरा की गई थी। अकादमिक तनाव रेटिंग पैमाने चार बिंदु पैमाने था जिसमें परीक्षा तनाव, सहकर्मियों से तनाव, इंट्रापरसनल तनाव, अध्ययन आदत और समय प्रबंधन के बारे में 32 बयान शामिल थे। अध्ययन में पाया गया कि 80.20% छात्रों में मध्यम तनाव है, 13.5% हल्के तनाव और 6.2% गंभीर तनाव है। 82.30% विषयों में से सामान्य आत्म-सम्मान था और 6.2% कम आत्म सम्मान कर रहे थे। अकादमिक तनाव और आत्म-सम्मान के बीच महत्वपूर्ण लेकिन कम नकारात्मक संबंध पाया जाता है। अध्ययन में निष्कर्ष निकाला गया कि अधिकांश किशोर किशोरावस्था से लेकर गंभीर और आत्म-सम्मान तक अकादमिक तनाव का

अनुभव करते हैं। यह साबित कर दिया है कि अकादमिक तनाव और आत्म-सम्मान के बीच एक महत्वपूर्ण लेकिन नकारात्मक संबंध मौजूद है।

4- देबासरी साधुखन और परोमिता घोष (2017) अध्ययन के प्रवाह अकादमिक समायोजन और उच्च माध्यमिक छात्रों की अध्ययन भागीदारी में प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं। प्रतिभागी कला के छात्र विद्वानों की गतिविधियों के लिए सबसे उपयुक्त विशेषताओं को प्रकट करते हैं; वे शैक्षिक समायोजन में सबसे अधिक हैं और अध्ययन के लिए सबसे समर्पित हैं। इसलिए, कला या मानविकी में करियर की संभावनाएं माध्यमिक छात्रों के बीच लोकप्रिय होनी चाहिए ताकि स्ट्रीम को वह महत्व मिले जो इसके लायक है। विज्ञान पाठ्यक्रम में प्रवेश पूरी तरह से माध्यमिक परीक्षा प्रदर्शन पर भरोसा नहीं करना चाहिए। मनोवैज्ञानिक परीक्षण चयनप्रोसेस का हिस्सा बनना चाहिए ताकि विज्ञान का अध्ययन करने के लिए केवल सबसे उपयुक्त हो। यह अतिसंवेदनशीलता, **रूचि में** कमी और अनुचित प्रतिस्पर्धा की जांच करेगा। विज्ञान और वाणिज्य पाठ्यक्रम में सुधार की जरूरत है ताकि विद्यार्थियों की अध्ययन भागीदारी में सुधार हो।

5- Akinleke Wasiu Olaitan (फरवरी 2017) इस अध्ययन का इरादा यह जांचना था कि एकल माता-पिता परिवारों और दो माता-पिता परिवारों के छात्रों के अकादमिक प्रदर्शन के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर है या नहीं। यह निर्धारित करने का भी प्रयास करता है कि लिंग अंतर उनके अकादमिक प्रदर्शन को प्रभावित करते हैं या नहीं।

6- ओगुन राज्य, नाइजीरिया के वाईवा दक्षिण स्थानीय सरकारी क्षेत्र के वरिष्ठ माध्यमिक छात्रों का आकलन किया गया था और एकल माता-पिता परिवारों के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन और दो माता-पिता परिवारों के उन लोगों के अकादमिक प्रदर्शन में महत्वपूर्ण अंतर था। यह खोज पिछले अध्ययनों के अनुरूप है कि दो माता-पिता परिवारों के छात्र आम तौर पर जीवन से अधिक संतुष्ट होते हैं (मोज़गन और मोहम्मदरेजा, 2011) और एकल शैक्षिक छात्रों (यूवाइफ़ो, 2008; उशी, एमेका, ओनॉन्गा) के छात्रों की तुलना में अपने अकादमिक कार्यों में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। और ओवोलबी, 2012)। जैसा कि पहले बताया गया था, इस खोज को इस तथ्य से समझाया जा सकता है कि दो माता-पिता परिवारों के बच्चे।

पर्याप्त देखभाल, ध्यान, गर्मी, पिता- और मां-आकृति लगाव और भावनात्मक। क्षमता का अनुभव दो की विशेषता है माता-पिता परिवार दूसरी तरफ, एकल माता-पिता के बच्चों को। विकृतियों में व्याकुलता, भावनात्मक समस्याएं, अनुशासनात्मक समस्याएं और अपर्याप्तता हो सकती है। सिंगल माता-पिता को अकेले बच्चे / बच्चों की सामाजिक आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करना मुश्किल हो सकता है। हालांकि, अपिया और ओलुतोला (2007) ने नोट किया कि यह स्थिति हर समय सच नहीं हो सकती है क्योंकि एकल माता-पिता परिवारों में कुछ बच्चे हैं जो दो मूल परिवारों के बच्चों की तुलना में बेहतर शैक्षिक रूप से प्रदर्शन करते हैं। उनके अनुसार, इस तरह के बच्चों के व्यक्तित्व में निहित अन्य कारकों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। उपर्युक्त निष्कर्षों को देखते हुए, माता-पिता के अलगाव (तलाक या असहमति के रूप में) को ध्यान में रखा जाना चाहिए। यह तब किया जा सकता है जब साझेदार एक दूसरे के व्यक्तिगत मतभेदों को सहन करना सीखें; वैवाहिक मुद्दों को खराब करने की अनुमति न दें और दोनों अपने परिवार के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हैं। इसके अलावा, धार्मिक नेताओं, सलाहकारों और सरकार को बच्चों के जीवन पर परिवार की संरचना के महत्व और एक सुव्यवस्थित समाज सुनिश्चित करने के बारे में प्रबुद्ध माता-पिता में शामिल होना चाहिए।

7- Ertuğrul ŞAHİN1, Yaşar BARUT2, Ercümend ERSANLI1, Hatice kumcağız 2 (2014) आत्म-सम्मान और सामाजिक उपस्थिति चिंता: माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की एक जांच। प्राथमिक शिक्षा ऑनलाइन में प्रकाशित एक पिछले अध्ययन में, डोगन (2011) ने तुर्की में स्नातक छात्रों (डोगन, 2010) पर अपने पहले अनुकूलन अध्ययन के बाद एक किशोर नमूना में सामाजिक उपस्थिति चिंता के पैमाने के मनोचिकित्सा गुणों की जांच की। उन्होंने सिफारिश की कि शोधकर्ता सामाजिक उपस्थिति चिंता, संचार कौशल, अवसाद, चिंता, और आत्म-सम्मान के बीच संबंधों की जांच के लिए और अधिक शोध करें, लेकिन शोधकर्ताओं ने आम तौर पर उनकी सलाह को नजरअंदाज कर दिया। डोगन (2011) की सिफारिश के बाद, यह अध्ययन माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में आत्म-सम्मान और सामाजिक उपस्थिति की चिंता के बीच संबंधों पर रिपोर्ट करता है। कुल 2222 (1133 महिला और 1089 पुरुष)

8- तुर्की के केंद्रीय काला सागर क्षेत्र में मेरिज़िफ़ोन शहर से 11-15 साल के किशोरों का चयन किया गया था। प्रतिभागियों की औसत उम्र 12.76 की मानक विचलन के साथ 12.76 थी। स्व-रिपोर्टिंग उपायों में एक व्यक्तिगत सूचना फॉर्म, रोसेनबर्ग स्व-एस्टीम स्केल, और सामाजिक उपस्थिति चिंता स्केल शामिल थे, शिक्षकों की देखरेख में छात्रों को प्रशासित किया गया था। पियरसन सहसंबंध विश्लेषण का उपयोग करके डेटा का विश्लेषण किया गया था। परिणाम बताते हैं कि प्रत्येक लिंग के लिए आत्म-सम्मान और सामाजिक उपस्थिति चिंता के बीच एक महत्वपूर्ण नकारात्मक संबंध था। इन निष्कर्षों से पता चलता है कि कम आत्म-सम्मान वाले किशोर सामाजिक उपस्थिति चिंता या इसके विपरीत के उच्च स्तर प्रदर्शित कर सकते हैं। इन निष्कर्षों के प्रभाव, विशेष रूप से तुर्की में मार्गदर्शन और परामर्श सेवाओं के लिए, और मार्गदर्शन सलाहकारों और शोधकर्ताओं के लिए संभावित अनुप्रयोगों **पर वाद विवाद** किया गया है।

9- डॉ सुभाष सरकार * 1, संगिता बनिक 2 विज्ञापन छात्रों के समायोजन और अकादमिक उपलब्धि पर एक अध्ययन। पता लगाना गया जीवन समायोजन के लिए संघर्ष की निरंतर श्रृंखला प्रस्तुत करता है। समायोजन तनाव से निपटने और जरूरतों को पूरा करने के व्यक्ति के प्रयास का नतीजा है: पर्यावरण के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाए रखने के उनके प्रयास भी। स्मिथ के मुताबिक, एच.सी. 'एक अच्छा समायोजन वह है जो यथार्थवादी और संतोषजनक दोनों है। लंबी अवधि के बाद यह निराशा, तनाव और चिंताओं को कम करता है जिसे किसी व्यक्ति को सहन करना चाहिए। खोज से, अनुसंधान कार्य शोधकर्ता को यह निष्कर्ष निकालने का नेतृत्व करता है कि लड़कों और लड़कियों के बीच समायोजन और अकादमिक उपलब्धि में भी महत्वपूर्ण अंतर नहीं हैं। डेटा से यह दिखाया जा सकता है कि भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षणिक समायोजन, लड़कों और लड़कियों की समायोजन समस्याओं के स्तर को बढ़ा रहा है। लेकिन [सरकार एट के समायोजन और अकादमिक उपलब्धि के बीच एक सह-संबंध था। अल।, वॉल्यूम 5 (अंक 6): जून, 2017] आईएसएसएन- 2350-0530 (ओ), आईएसएसएन -23 9 4-3629 (पी) आईसीवी (इंडेक्स कॉपरनिकस वैल्यू) 2015: 71.21 आईएफ: 4.321 (कॉसमॉस इम्पैक्ट फैक्टर), 2.532 (आई 2ओआर) इन्फोबेस इंडेक्स आईबीआई फैक्टर 3.86 एचटीपी http://www.granthaalayah.com © अंतर्राष्ट्रीय जर्नल ऑफ रिसर्च –

गथालय [668] लड़के और लड़कियां भी। इसलिए यदि किशोरावस्था के छात्र अच्छे तरीके से समायोजित होते हैं, तो अच्छे अकादमिक प्रदर्शन करने की संभावना है। लेकिन अगर उनके पास कोई समायोजन समस्या है तो परामर्श की निरंतर आवश्यकता है

10- जो स्थिति के साथ पर्याप्त प्रतिद्वंद्विता कौशल प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। छात्रों को अपने विचार व्यक्त करने और स्कूल अधिकारियों के साथ अपनी समस्याओं पर चर्चा करने का अवसर दिया जाना चाहिए। यह छात्रों के बीच आत्मविश्वास और मानसिक संतुष्टि विकसित करता है। भ्रमण, चर्चा आदि खेल रूचि विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं को तलाशने और व्यक्त करने के उत्कृष्ट अवसर प्रदान करते हैं। इन छात्रों और उनके स्वस्थ समायोजन के अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के विकास के लिए आयोजित किया जाना चाहिए। माता-पिता और शिक्षकों को तनाव और तनाव के समय बच्चों को बौद्धिक, सामाजिक और भावनात्मक समर्थन प्रदान करना चाहिए। इस तरह छात्र अनावश्यक आकांक्षाओं से बचने के लिए अपनी मजबूत और कमजोर विशेषताओं को पहचानने में सक्षम होंगे।

11- M.V.R. राजू और टी। खजा रहमतुल्ला आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम (2007) स्कूल छात्रों के बीच एक अध्ययन समायोजन समस्याएं। स्कूल के बच्चों का समायोजन उनके लिंग, कक्षा में जिसमें वे पढ़ रहे हैं, उनके स्कूल में अपनाए गए निर्देशों का माध्यम है, स्कूल के प्रबंधन और उनके माता-पिता शिक्षा और व्यवसाय का प्रकार आदि से निर्धारित होता है। उनके समायोजन के संबंध में बच्चों में मतभेदों को नोट किया जाता है "मुख्य रूप से उस स्कूल के संबंध में जहां वे पढ़ रहे हैं। जबकि पारिवारिक समायोजन अधिक उच्च वर्ग है, अकादमिक समायोजन, सरकार द्वारा स्थापित स्कूलों के बच्चों के बीच बेहतर है, और अंग्रेजी और निजी तौर पर प्रबंधित स्कूलों के छात्रों के लिए भावनात्मक समायोजन अधिक है। आगे माता-पिता की शिक्षा और व्यवसाय ने स्कूल के बच्चों के भावनात्मक समायोजन को काफी प्रभावित किया।

A STUDY OF THE RELATIONSHIP BETWEEN SELF-CONCEPT AND ADJUSTMENT OF SECONDARY SCHOOL STUDENTS

By

MAHENDER REDDY SARSANI* OCT. 2007

Self-concept and adjustment are two important psychological aspects influencing the personalities of individuals. The term self-concept refers to the individual's perception or view of himself. It refers to those perceptions, beliefs, feelings, attitudes, and values, which the individual's perception of his abilities and his status and roles in the outer world. Self-esteem is another way of viewing self-concept. A person with high self-esteem has a positive self-concept while a person with low self-esteem has a negative self-concept. Life is a process of progressive adjustment and children should be stimulated to do their best. The aim of education is to develop the personality of the child, to make to adjust with the environment. If the adjustment is not proper it leads to maladjustment. The researcher made an attempt to study the self-concept and existing adjustment problems of the students with respect to their sex and type of school. Further an attempt has been also made to study the relationship between the self-concept of the learners and their adjustment problems. A normative survey method was used for the present research. A sample of 120 students of Warangal City were selected by simple random sampling technique. The study revealed that no significant difference was found between boys and girls in self-concept and adjustment but the difference was found between the private and government school students. The co-efficient of correlation between the students' self-concept and adjustment was found to be 0.70, which is significant at 0.01 level. It indicates that high scores in self-concept tend to accompany with low scores in adjustment and vice versa.

- JOURNAL OF THE National Medical Association

HOW THE SELF-IMAGE/CONCEPT/ IDENTITY COMPLEX INTERACT

The first of two contrasting examples of how the self-image/concept/identity complex interact is the *"street people"* of the black ghetto. For them, *"respect"* is at the heart of their street code 11. So meaningful is *"disrespect"* that the *"baddest dudes on the streets"* are willing to risk death over the principle of *"respect."* In other words, *"respect"* represents the top value within their philosophy of life. Built around a *respect*-oriented philosophy of life is their character. One of the *"bad"* character traits they use to gain *"respect"* is the taking of other's possessions. The more expensive jackets, sneakers, and gold jewelry they acquire by whatever means, the higher their self-image.

VOL. 95, NO. 5, MAY 2003

14- जोसेफ ए बेली, स्व-छवि, आत्म-अवधारणा, और आत्म-पहचान पुनरीक्षित। उच्च माध्यमिक छात्रों पर एक अध्ययन व्यक्तिगत समस्याएं, अध्ययन भागीदारी और अकादमिक उपलब्धि एम मोहम्मदयुप्खन 1, एस मणि 2 (जर्नल 2012 मई) सार: अध्ययन उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच छात्रों की व्यक्तिगत समस्याएं, अध्ययन प्रक्रिया और अकादमिक उपलब्ध्दि के स्तर का पता लगाने का लक्ष्य है। इस मामले में नमूने के चयन के लिए उपयोग की जाने वाली नमूना तकनीकें यादृच्छिक नमूना तकनीक थीं। Usilampatti शिक्षा जिले के तीन अलग-अलग स्कूलों से कुल 306 उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का चयन किया गया था। जांचकर्ता ने सरकारी स्कूल से 102 छात्रों, सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल के 102 छात्रों और निजी स्कूल के 102 छात्रों का चयन किया। जांचकर्ता द्वारा

विकसित व्यक्तिगत डेटा शीट, छात्र पर्सनल प्रॉब्लम्स प्रश्नावली एन एन विग एंड आर एन नग्पाल, (1 9 80) द्वारा विकसित की गई है। सद्दी इनवेल्वमेंट स्केल विकसित किया गया है, जयलक्ष्मी इंदौरसन (1 9 78) का इस्तेमाल डेटा एकत्र करने के लिए किया जाता था। परिणाम 'टी' परीक्षण, और 'एफ' परीक्षण के माध्यम से सांख्यिकीय रूप से विश्लेषण किए गए थे। लिंग पर छात्रों की व्यक्तिगत समस्याओं, अध्ययन भागीदारी और अकादमिक उपलब्धि पर असर पड़ता है। छात्र व्यक्तिगत समस्याएं, अध्ययन प्रक्रिया और अकादमिक उपलब्धि एक-दूसरे से संबंधित हैं।

15- बी Anboucarassy 18-04-2015 अपनी शिक्षा शैलियों के संबंध में उच्च माध्यमिक छात्रों की क्षमता को सुलझाने में समस्या वर्तमान अध्ययन से पता चला है कि उच्च माध्यमिक छात्रों को समस्या सुलझाने की क्षमता और सीखने की शैली के बीच सकारात्मक संबंध है। समस्या निवारण क्षमता और सीखने की शैली को प्रभावित करने के लिए विभिन्न शिक्षण तकनीकों और पद्धति को अपनाया जा सकता है। शोध से पता चलता है कि व्यक्ति अपनी समस्याओं और चुनौतियों के संबंध में सीखने और समस्या निवारण की स्पष्ट रूप से विभिन्न शैलियों का विकास और उपयोग करते हैं। यह भी इंगित करता है कि इस क्षेत्र में व्यापक अध्ययन की आवश्यकता है। प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर शिक्षण कार्यक्रमों को सीखने की शैलियों और समस्या सुलझाने के कौशल को ध्यान में रखकर फिर से डिजाइन किया जा सकता है

समस्या कथन –

उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय के सदंर्भ में समायोजन व अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन –

शोध के उद्देश्य

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर आत्म सम्प्रत्यय के संदर्भ में विद्यार्थियों के समायोजन पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

(A) उच्च माध्यमिक स्तर पर राजकीय महाविद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय के संदर्भ में समायोजन पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन।

(B) उच्च माध्यमिक स्तर पर निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय के संदर्भ में समायोजन पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

2. उच्च माध्यमिक स्तर विद्यार्थियो के आत्म सम्प्रत्यय के संदर्भ में अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।

(A) उच्च माध्यमिक स्तर पर राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय के संदर्भ में अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।

(B) उच्च माध्यमिक स्तर निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय के संदर्भ में अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करना।

सम्प्रत्ययो की व्याख्या

आत्म सम्प्रत्यय (Self oncept) – आत्म सम्प्रत्यय पद का प्रयोग शिक्षा एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में इतने विस्तृत रूप में किया जाता है कि इसे सामान्य रूप में व्यक्ति के रूप में सम्बन्धित विचारो भावनाओं एवं अभिवृक्तियों से समझा जाता है। आत्म सम्प्रत्यय की चर्चा सर्वप्रथम रेन डेसकार्टेस ने Congnite संज्ञान अर्थात व्यक्ति के स्वयं के अस्तित्व की जागरूकता के सन्दर्भ में की थी।

जुंग के शब्दो में – आत्म व्यक्तित्व की संरचना में मध्यवर्ती बिन्दु है। यह व्यक्तित्व के लक्ष्य से आबद्ध है। यह एक ऐसा तत्व है जिसे व्यक्ति सदैव प्राप्त करने का प्रयास करता है किन्तु वास्तविक रूप में उस तक पहुंच नही पाता है। आत्म सम्प्रत्यय में व्यक्ति मैं क्या हूँ व मैं कौन हूँ, जैसे विषय में एक प्रतिभा या धारणा बनाता है।

समायोजन (Adjustment) – बोरिंग लैगाफिल्ड के अनुसार – समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है।

गेट्स के अनुसार – समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।

(iii) **अध्ययन सम्बन्धी समस्याएं** –

जब विद्यार्थी स्वयं को समझने में या वातावरण के साथ संतुलन बनाने में असमर्थ अनुभव करता है तो उसे अध्ययन सम्बन्धी कई समस्याओं का सामना करना पडता है जैसे –

- विद्यालय वातावरण को समझने में कठिनाई महसूस करना।
- अध्यापको को समझने में कठिनाई सहसूस करना।
- अपने सहपाठियों के साथ सामजस्य बनाने व अपने से उच्च वर्ग के विद्यार्थियो से समस्या के समाधान में सहयोग प्राप्त करने में कठिनाई महसूस करना।
- चिन्ता, दबाव, तनाव, कुंठा का शिकार होना।
- उचित शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में असमर्थ रहना।
- विद्यालय प्रदत्त कार्यो को समय से पूर्व करने व अन्य गतिविधियों में भाग लेने में असमर्थ महसूस करना।
- पारिवारिक वातावरण शैक्षिक उपलब्धि प्राप्ति में बाधक समझने जैसी सोच का पनपना।
- स्वयं को अनुशासित रखने में कठिनाई महसूस करना।

परिकल्पना :–

परिकल्पना शब्द के लिए अंग्रेजी का HYPOTHESIS शब्द प्रयुक्त किया जाता है जो दो शब्दो से मिलकर बना है।

HYPO + THESLS जहां HYPO का अर्थ है, संभावित या जिसकी पुष्टि की जानी है, अर्थात अप्ष्ट तथा THESIS का अर्थ है समस्या कथन अर्थात वह समस्या कथन जिसकी अभी पुष्टि की जानी है।

परिकल्पनाएँ :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय के संदर्भ में विद्यार्थियों के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नही पाया जाता है।

(i) उच्च माध्यमिक स्तर पर राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय के संदर्भ में विद्यार्थियों के समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नही पाया जाता है।

(ii) उच्च माध्यमिक स्तर पर निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय के संदर्भ में समायोजन पर कोई सार्थक प्रभाव नही पाया जाता है।

2. उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय के संदर्भ में विद्यार्थियों की अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं पर कोई सार्थक प्रभाव नही पाया जाता है।

(i) उच्च माध्यमिक स्तर पर राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों आत्म सम्प्रत्यय के संदर्भ में अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं पर सार्थक प्रभाव नही पाया जाता है।

(ii) उच्च माध्यमिक स्तर पर निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय के संदर्भ में अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं पर सार्थक प्रभाव नही पाया जाता है।

शोध में प्रयुक्तचर

चरो के ज्ञान मापन व नियंत्रक के अभाव में शोध करना संभव नही है। चर को चल राशि भी कहते है। चर अंग्रेजी के Variable का हिन्दी रूपान्तरण है जिसका अर्थ है ''परिवर्तन होना'' चर की मात्रा में परिवर्तन होना चर का गुण है।

मेथसन के अनुसार – ''वैज्ञानिक अन्वेषण में चर वह अवस्था है जिसके मूल्य में परिवर्तन होता है।''

चर के दो प्रकार होते है –

1. स्वतंत्र चर – साधारण रूप से प्रयोगकर्त्ता जिस कारक के प्रभाव का अध्ययन करना चाहता है और प्रभाव में जिस पर उसका नियंत्रक रहता है, उसे स्वतंत्र चर कहते है।

प्रस्तुत शोध में स्वतंत्र चर है –

(i) आत्म सम्प्रत्यय

2. आश्रित चर – स्वतंत्र चर के प्रभाव के कारण जो व्यवहार परिवर्तन होता है जिसका अध्ययन एवं मापन किया जाता है उसे आश्रित चर कहते है।

प्रस्तुत शोध में आश्रित चर है –

(i) समायोजन

(ii) अध्ययन सम्बन्धी समस्याएं

अध्ययन में प्रयुक्त चरों के चयन का औचित्य

विकास एवं वृद्धि जन्म से ही चलने वाली प्रक्रिया है लेकिन सबसे तीव्र परिवर्तन 13–18 वर्ष की अवस्था में देखने को मिलते है। उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समायोजन व अध्ययन सम्बन्धी समस्याएं ज्यादा देखने को मिलती है। इस स्तर पर विद्यार्थी घर, समाज व विद्यालय ने अपनी पहचान बनाने का प्रयास करता है। तनाव, दबाव, व दुश्चिन्ताओं से ग्रस्त पाया जाता है। भविष्य को लेकर चिन्तित रहते है। सम्मान व प्रशंसा नही मिलने की स्थिति में उग्र रूप भी ले लेते है। कुछ विद्यार्थी प्रदत्त परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को व्यवस्थित कर लेते है। कुछ अनुकुलन में असमर्थ महसूस करते है। और अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं से ग्रस्त हो जाते है। उनके भविष्य का लक्ष्य भी इससे प्रभावित होता है। मेरा यह शोध विषय आधुनिक है तथा समाज के लिए उपयोग सिद्ध होगा इसलिए मैने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय समायोजन व अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं का चयन अध्ययन हेतु किया है।

अनुमानित न्यादर्श

विस्तृत समूह के सम्बन्ध में अनुमानित औसत निष्कर्ष निकालने हेतु एक छोटे समूह का चयन किया जाता है जिसे न्यादर्श कहते है। न्यादर्श चयन में प्रायः दो शब्द हमारे सामने आते है। जनसंख्या व न्यादर्श जिनके सम्बन्ध में जानकारी रखना उचित होगा।

जनसंख्या –

इकाईयों के समूचे समूह को जिसके लिए चर का मान अभिष्ट है। जनसंख्या कहते है। प्रत्येक शोध कार्य के लिए जनसंख्या का निर्धारण करना अभीष्ट है। इसी जनसंख्या के सर्वेक्षण से तथ्यों एवं प्रदत्तो का

आकंलन किया जाता है। प्रस्तुत शोध की जनसंख्या के अध्ययन के अन्तर्गत राजस्थान राज्य के अलवर जिले की थानागाजी तहसील के उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा XII) के छात्र–छात्राएं शामिल किये जायेगें।

न्यादर्श (Simple) न्यादर्श अथवा प्रतिदर्श समष्टि का वह अंश है। जिसमें अपनी समष्टि की समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिबिम्ब रहता है। किसी भी शोधकर्त्ता के लिए समग्र में सभी का अध्ययन करना सम्भंव नही होता केवल थोडे से ही व्यक्तियों का अध्ययन करना सम्भंव होता है जो उन सभी का प्रतिनिधित्व करते हो और जिन पर किये गये अध्ययनों के आधार पर समग्र के लिए निष्कर्ष निकाले जाते है। प्रस्तुत शोध में कक्षा XII के 400 विद्यार्थी चयनित किये जायेग।

न्यादर्श (Simple) प्रस्तावित शोध प्रबन्ध में द्विस्तरीय न्यादर्श पद्वति अपनायी जायेगी अर्थात विद्यालयो का चयन स्वेच्छा से तथा विद्यार्थियों का चयन (Random Sampling Method) से किया जायेगा।

गुडे एवं हाट के अनुसार ''देव निदर्शन में समग्र की प्रत्येक इकाई को इस प्रकार अवसर दिया जाता है कि चयन प्रक्रिया में चुने जाने की सबको संभावना रहती है।

यूल एवं केण्डाल के अनुसार – जब समग्र की प्रत्येक इकाई का निदर्शन में सम्मिलित होने का समान अवसर हो तब किसी इकाई को चयन दैव निदर्शन है।

अनुमानित न्यादर्श

क्र.सं.	विद्यालय	विद्यार्थी	कुल योग

1	राजकीय	50	50
2	राजकीय	50	50
3	राजकीय	50	50
4	राजकीय	50	50
5	निजी	50	50
6	निजी	50	50
7	निजी	50	50
8	निजी	50	50
कुल योग	08	400	400

सम्प्रत्ययों की व्याख्या

(i) आत्म सम्प्रत्यय –

(ii) समायोजन –

प्रदत्तो के संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण (Tools)

प्रदत्तो का संकलन निम्न मापनियों का प्रयोग कर उच्च माध्यमिक स्तर से किया जायेगा।

1. आत्म–प्रत्यय मापनी – S.P. Ahluwalia and H.S. Singh (Children's self concept scale)
2. समायोजन मापनी – A.K.P. Sinha and R.P. Singh. (Adjustment Inventory for school students.)
3. अध्ययन सम्बन्धी समस्या मापनी –

परिसीमाएं

– प्रस्तुत शोध में न्यादर्श का चयन केवल राजस्थान राज्य के अलवर जिले की थानागाजी तहसील से ही किया जायेगा।

– थानागाजी तहसील के सरकारी व निजी विद्यालयों से ही विद्यार्थियो का चयन किया जायेगा।

– शोध हेतु सरकारी व निजो क्षेत्र के केवल 8 विद्यालयों का चयन किया जायेगा।
– शोध हेतु इन 8 विद्यालयों से केवल 400 विद्यार्थियों का चयन शोध हेतु किया जावेगा।
– 400 विद्यार्थियों में भी 200 विद्यार्थी 4 सरकारी विद्यालयों से तथा 200 विद्यार्थी 4 निजी विद्यालयों से चुने जायेगें।

शैक्षिक फलितार्थ

प्रस्तुत शोध भविष्य में विद्यार्थियों की अध्यापन सम्बन्धी समस्याओं को दूर करने के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। इसका लाभ शिक्षकों, अभिभावकों व विद्यार्थियों को मिलेगा।

1. शिक्षकों के लिए लाभ – विद्यालय स्तर पर शिक्षक विद्यार्थियों के सर्वागींण विकास को ध्यान में रखते हुए उनकी भावनाओं को समझकर उनके के साथ स्नेहिल व्यवहार रखते हुए सम्मानजनक तरीके से उनकी समस्याओं को दूर कर सही मार्ग प्रशस्त कर सकेगें।
2. विद्यार्थियों के लिए लाभ – विद्यार्थी स्वयं के बारे में सही सोच बनाकर अपने भविष्य के निर्माण हतु अग्रसर हो सकेगें। परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को समायोजित कर शैक्षिक उपलब्धियों के क्षेत्र में सकारात्मक व सृजनात्मक परिणाम प्राप्त कर समाज व परिवार के लिए स्वयं की भागीदारी निभाने का प्रयास करेगें।
3. अभिभावको के लिए – किशोर अवस्था में बालको के व्यवहार में असामान्य परिवर्तन देखकर अभिभावक भी चिन्तित रहते है। प्रस्तुत

शोध से प्राप्त निष्कर्षो को जानकर अभिभावक अपने किशोर किशोरियों के प्रति स्नेहिल व सम्मानजनक व्यवहार करेगें। उनकी चिन्ता को सरल तरीके से दूर कर बच्चो को दु:चिन्ता, तनाव, दबाव से मुक्त कर उनकी अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं को दूर करने का प्रयास करेगें।

प्रयुक्त सांख्यिकीय **(Mathalogy)** – प्रस्तुत शोध में प्राकल्पनाओं को दृष्टिगत रखते हुए प्राप्त प्रदत्तो के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा।

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन **Standard devi** –
3. **T** परीक्षण **T – Test**

1. मध्यमान – मध्यमान वह प्राप्तांक है जिसके दोनो ओर प्रदत्तो का विचलन समान होता है।

   सूत्र

$$x = \frac{EX}{N}$$

2. प्रमाप विचलन –

$$\frac{-\sqrt{Ed^2}}{N}$$

3. टी–परीक्षण – टी परीक्षण दो समूहो के मध्यमान की सार्थकता को जांचने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। इसके द्वारा परिकल्पनाओं की जांच की जाती है।

$$T = M1 - M2$$

$$\sqrt{(\frac{Ed12 + d2\,2}{N1 + N2 - 2})\,(\frac{N1 + N2}{N1 + N2})}$$

शोध प्रक्रिया के चरण

प्रस्तावित शोध की प्रक्रिया निम्न चरणों में पूर्ण की जायेगी।

1. सर्वप्रथम शोधकर्त्री अलवर जिले के राजस्थान बोर्ड द्वारा संचालित राजकीय व निजी हिन्दी माध्यम वाले उच्च माध्यमिक विद्यालयों की सूची तैयार करेगी।
2. देव निदर्शन द्वारा इन विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का चयन कर सूची तैयार करेगी।
3. चयनित विद्यालयों के प्राचार्यो से सम्पर्क स्थापित कर उन्हे शोध उद्देश्यों से अवगत करवाकर परीक्षणों के प्रशासन हेतु निर्धारित तिथि की सहमति लेगी।
4. निर्धारित तिथि को विद्यालयों में जाकर विद्यार्थियों पर आत्म–प्रत्यय समायोजन व अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं से सम्बन्धित प्रश्नावली को प्रशासित करेगी।
5. तत्पश्चात् राजकीय व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का वर्गीकरण करके उसकी एक सूची तैयार की जायेगी तथा प्राप्त प्रदत्तो का फलाकंन, साख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या प्रस्तुत की जायेगी।

प्रस्तावित शोध अध्ययन का संगठन

प्रस्तुत शोध अध्ययन पांच अध्यायों में संगठित किया जायेगा।

प्रथम अध्याय –

इसके अन्तर्गत समस्या की सम्प्रत्ययनात्मक पृष्ठभूमि, समस्या का औचित्य, समस्या कथन, समस्या के उद्देश्य, सम्प्रत्ययों की व्याख्या, प्राकल्पनाएं एवं परिसीमाओं का उल्लेख किया जाएगा।

द्वितीय अध्याय –

इस अध्याय के अन्तर्गत शोध के सम्बन्धित साहित्य का उल्लेख किया जायेगा।

तृतीय अध्याय –

शोध आकल्प के अन्तर्गत शोध विधि, अध्ययन के चर, न्यादर्श, प्रयुक्त उपकरणों का विवरण एवं सांख्यिकी का उल्लेख किया जायेगा।

चतुर्थ अध्याय –

इस अध्याय के अन्तर्गत प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या प्रस्तुत की जायेगी।

पंचम अध्याय –

पंचम अध्याय में उपलब्धियां, शोध निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत किये जायेगें।

अन्त में शोध – सारांश प्रस्तुत किया जायेगा तदन्तर संदर्भ सूची, परिशिष्ट संलग्न किये जायेगें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची एवं परिशिष्ट

क्र.सं.	लेखक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक
1	वर्मा श्रीमती रीता अरोडा वर्मा श्रीमती सुदेश मारवाह	शिक्षक एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार	डॉ. अमित पारीक 23, भगवान दास मार्केट, चौडा रास्ता जयपुर 9414388190
2	शर्मा शिवचरण	अधिगम का मनोसामाजिक आधार एवं शिक्षण	शिक्षा सरस्वती प्रकाशन
3.	डॉ. गोदारा अशोक कु. एवं सिंह गिरीषपाल	शैक्षिक मनोविज्ञान	कल्पना पब्लिकेशन
4.	तिवाडी गोविन्द	शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार	विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 1989
5.	प्रो. राममूर्ति	शिक्षा मनोविज्ञान	अंकित पब्लिकेशन्स
6.	कपिल एच.के.	सांख्यिकी के मूल तत्व	विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 1982
7.	डॉ. सुरेन्द्र सिंह सोमदत्त शर्मा	अधिगम का मनोसामाजिक आधार एवं शिक्षक	स्वाति पब्लिकेशन
8.	गुड एण्ड हैट (1952)	मैथड्स इन सोशल रिसर्च	मैग्रा हिल बुक कं., न्यूयार्क
9.	जैन अनुराग (2008)	शैक्षिक अनुसंधान की आधुनिक प्रवृतियाँ	एन.आर. बुक्स न्यू देहली
10.	कपिल एच.के. (1984)	अनुसंधान प्रविधियाँ	हरप्रसाद भार्गव प्रकाशन, आगरा
11.	रायजादा, बी.एस. व वर्मा वदंना (2008)	शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व	हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
12.	राव, एस नारायण (1991)	काउंसलिंग एण्ड गाइडैस	अभिषेक प्रकाशन चंडीगढ़
13.	सिंह, रामपाल, राधा वल्लभ उपाध्याय (1974)	शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन	विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
14.	शर्मा, आर.के. एच.एस. बरौलियास (2006)	विद्यालय प्रबन्ध,	राधा प्रकाशन आगरा
15.	शर्मा, रमेश (2005)	गाईडैस एण्ड	कल्पना पब्लिकेशन,

		काउंसलिंग	देहली
16.	शर्मा, ताराचन्द्र (2002)	मार्डर्न मैथड्स ऑफ गाइडैंस एण्ड काउंसलिंग	स्वरूप एण्ड संस, न्यू देहली
17.	शर्मा, आर.ए. (1995)	शिक्षा अनुसंधान 9वां संस्करण	सूर्या प्रकाशन, मेरठ
18.	सक्सेना, राधारानी एवं नाटाणी (2006)	शैक्षिक प्रबंधन एवं विद्यालय संगठन	माया प्रकाशन, जयपुर
19.	सक्सेना, राधारानी एवं भटनागर नमिता (2002)	शिक्षा में निर्देशन	साहित्यगार प्रकाशन, जयपुर
20.	सक्सेना, राधारानी एवं रानी इन्दिरा (2009)	शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श	राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर